# माँ गौरी चालीसा

॥ दोहा ॥

मन मंदिर मेरे आन बसो,
आरम्भ करूं गुणगान।
गौरी माँ मातेश्वरी,
दो चरणों का ध्यान॥

पूजन विधी न जानती,
पर श्रद्धा है आपर।
प्रणाम मेरा स्विकारिये,
हे माँ प्राण आधार॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो हे गौरी माता,
आप हो मेरी भाग्य विधाता।
शरनागत न कभी गभराता,
गौरी उमा शंकरी माता॥

आपका प्रिय है आदर पाता,
जय हो कार्तिकेय गणेश की माता।

महादेव गणपति संग आओ,
मेरे सकल कलेश मिटाओ॥

सार्थक हो जाए जग में जीना,
सत्कर्मो से कभी हटु ना।
सकल मनोरथ पूर्ण कीजो,
सुख सुविधा वरदान में दीज्यो॥

हे माँ भाग्य रेखा जगा दो,
मन भावन सुयोग मिला दो।
मन को भाए वो वर चाहु,
ससुराल पक्ष का स्नेह मैं पायु॥

परम आराध्या आप हो मेरी,
फिर क्यूं वर में इतनी देरी।
हमरे काज सम्पूर्ण कीजियो,
थोड़े में बरकत भर दीजियो॥

अपनी दया बनाए रखना,
भक्ति भाव जगाये रखना।
गौरी माता अनसन रहना,
कभी न खोयूं मन का चैना॥

देव मुनि सब शीश नवाते,
सुख सुविधा को वर में पाते।

श्रद्धा भाव जो लेकर आया,
बिन मांगे भी सब कुछ पाया॥

हर संकट से उसे उबारा,
आगे बढ़ के दिया सहारा।
जब भी माँ आप स्नेह दिखलावे,
निराश मन मे आस जगावे॥

शिव भी आपका कहा ना टाले,
दया दृष्टि हम पे डाले।
जो जन करता आपका ध्यान,
जग मे पाए मान सम्मान॥

सच्चे मन जो सुमिरन करती,
उसके सुहाग की रक्षा करती।
दया दृष्टि जब माँ डाले,
भव सागर से पार उतारे॥

जपे जो ओम नमः शिवाय,
शिव परिवार का स्नेहा वो पाए।
जिसपे आप दया दिखावे,
दुष्ट आत्मा नहीं सतावे॥

सात गुण की हो दाता आप,
हर इक मन की ज्ञाता आप।

काटो हमरे सकल कलेश,
निरोग रहे परिवार हमेश॥

दुःख संताप मिटा देना माँ,
मेघ दया के बरसा देना माँ।
जबही आप मौज में आय,
हठ जय माँ सब विपदाएं॥

जिस पे दयाल हो माता आप,
उसका बढ़ता पुण्य प्रताप।
फल-फूल मैं दुग्ध चढ़ाऊ,
श्रद्धा भाव से आपको ध्यायु॥

अवगुन मेरे ढक देना माँ,
ममता आंचल कर देना माँ।
कठिन नहीं कुछ आपको माता,
जग ठुकराया दया को पाता॥

बिन पाऊ न गुन माँ तेरे,
नाम धाम स्वरूप बहू तेरे।
जितने आपके पावन धाम,
सब धामो को माँ प्राणम॥

आपकी दया का है ना पार,
तभी को पूजे कुल संसार।

निर्मल मन जो शरण में आता,
मुक्ति की वो युक्ति पाता॥

संतोष धन्न से दामन भर दो,
असम्भव को माँ सम्भव कर दो।
आपकी दया के भारे,
सुखी बसे मेरा परिवार॥

आपकी महिमा अति निराली,
भक्तो के दुःख हरने वाली।
मनोकामना पुरन करती,
मन की दुविधा पल मे हरती॥

चालीसा जो भी पढ़े सुनाए,
सुयोग वर वरदान मे पाए।
आशा पूर्ण कर देना माँ,
सुमंगल साखी वर देना माँ॥

॥ दोहा ॥

गौरी माँ विनती करूँ,
आना आपके द्वार।
ऐसी माँ कृपा कीजिये,
हो जाए उद्धार॥

हीं हीं हीं शरण में,
दो चरणों का ध्यान।
ऐसी माँ कृपा कीजिये,
पाऊँ मान सम्मान॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘‍♂️, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप  व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज  इंस्टाग्राम प्रोफाइल